श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 1 वर्ष, अंक 11, पृष्ठ 4, मूल्य 1.00

अखण्ड भारत सन्देश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज सोमवार 17 अगस्त, 2020

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट

लाल किले की प्राचीर पर शान से लहराया तिरंगा

नई दिल्ली, ऑनलाइन डेस्क। कोरोना महामारी के बीच देश भर 74वां स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर देश को संबोधित किया। इस दौरान राजधानी दिल्ली समेत देश भर में सुरक्षा के कड़े बंदोबश्त किये गये थे। हर बार की तरह इस बार भी पीएम मोदी का ड्रेस सेंस आकर्षण का केंद्र बना हुआ था। लालकिले पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ लखनऊ की बेटी मेजर श्वेता ध्वजारोहण समारोह की कमान संभाली। इससे पहले वह रूस में विक्ट्री डे पर भी भारत के तीनों अंगों की सेनाओं के मार्च पास्ट दल का नेतृत्व कर चुकीं हैं। इस दल का नेतृत्व करने वाली वह पहली महिला सैन्य अधिकारी हैं।

लाल किला पहुंचने पर लाहौरी गेट की तरफ रक्षामंत्री राजनाथ सिह व रक्षा सचिव अजय कुमार उनकी अगवानी की। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। पीएम मोदी ने कहा कि अब देश में एनसीसी का विस्तार किया जाएगा। एनसीसी को देश के 173 सीमाओं और तटीय जिलों तक सुनिश्चित किया जाएगा। बता दें कि राजधानी दिल्ली अभेद्य किले में तब्दील हो गई थी। दिल्ली पुलिस समेत देश की तमाम सुरक्षा-खुफिया एजेंसियां एलर्ट मोड में हैं। चप्पे-चप्पे पर अर्द्धसैनिक बलों के जवान तैनात थें। लाल किले की 10 किलोमीटर की परिधि में जगह-जगह मचान व मोर्चा बनाए गए थे। यहां अत्याधुनिक

तिरंगे की सलामी लेते प्रधानमंत्री व शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए

हथियारों से लैश अर्द्धसैनिक बल के जवान तैनात थे। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, राज्यसभा में विपक्ष के नेता गुलाम नबी आजाद और CDS जनरल बिपिन रावत लाल किले पहुंचे। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राजघाट जाकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी।

रेलवे ने कहा, निजी ट्रेन संचालकों को ठहराव के लिए हाल्ट स्टेशनों को चुनने की होगी आजादी

नई दिल्ली, पीटीआइ। रेलवे ने कहा है कि निजी संचालकों को 109 मार्गों पर 150 प्राइवेट ट्रेनें चलाने की जिम्मेदारी दी जाएगी यानी उनको उन स्टेशनों का चुनाव करने की छूट होगी जहां वे अपनी रेल गाड़ियों का हाल्ट चाहते हैं। रेलवे की ओर से जारी दस्तावेजों से यह खुलासा हुआ है। हालांकि, इसके लिए निजी ट्रेन संचालकों को पहले ही उन स्टेशनों की सूची रेलवे को मुहैया करानी होगी जहां पर वे प्राइवेट ट्रेनों का हाल्ट चाहते हैं। हाल्ट वाले स्टेशन आरंभ एवं गंतव्य के अलावा वह स्थान होंगे जहां निजी ट्रेनें ठहरेंगी। रेलवे की शर्तों के मुताबिक, निजी ट्रेन संचालकों को मार्ग के बीच में पड़ने वाले स्टेशनों पर ठहराव की सूची के साथ साथ यह भी बताना होगा कि रेलगाड़ी कितने बजे स्टेशन पर आएगी और कब रवाना होगी। यह निजी रेल परिचालन योजना का हिस्सा होगा। समझौते के मसौदे में कहा गया है कि निजी ट्रेन संचालक को इसकी सूचना पहले देने के साथ ठहराव की समय सारिणी एक साल के लिए होगी। हालांकि निजी ट्रेनों के बीच के स्टेशनों पर ठहराव की समीक्षा भी की जा सकती है। रेलवे के पास इसका अधिकार होगा। समाचार एजेंसी पीटीआइ के मुताबिक, आवेदन पूर्व बैठक में शामिल एक संभावित निजी संचालक के सवाल पर रेलवे ने बताया कि कंपनी नियम एवं शर्तों के मुताबिक स्टेशनों पर ठहराव का फैसला करने में लचीला रुख अपना सकती हैं। हालांकि, रेलवे ने यह भी कहा है कि निजी रेलगाड़ियों को उस रूट पर मौजूदा समय में सबसे तेज गति से चल रही ट्रेनों के ठहराव स्टेशनों पर अधिक ठहराव रखने की अनुमति नहीं होगी। निजी ट्रेन ऑपरेटरों को उन स्टेशनों को भी ठहराव में शामिल करना होगा जिनकी जरूरत बोगियों में पानी भरने, साफ सफाई करने आदि कार्यों के लिए होता है।

सांसद रीता के पति की कोरोना रिपोर्ट बताई गलत

प्रयागराज। सांसद डॉ. रीता बहुगुणा जोशी के पति की कोरोना जांच रिपोर्ट पहले पॉजिटिव बताई गई और फिर कुछ घंटे बाद कंप्यूटर एरर बताते हुए उन्हें निगेटिव बताया गया। रिपोर्ट पॉजिटिव बताए जाने पर सांसद ने एंबुलेंस से पति को दिल्ली ले जाने की व्यवस्था कर ली थी। सांसद ने इस बारे में डीएम और सीएमओ से बात कर नाराजगी भी जताई है। इलाहाबाद की सांसद डॉ. रीता बहुगुणा जोशी के पति की कोरोना जांच के लिए सैंपल लिया गया था। रविवार को दिन में संक्रमित लोगों की सूची जारी की गई तो इस सूची में सांसद के पति का नाम भी शामिल था। सांसद को इसकी जानकारी हुई तो पूरा परिवार परेशान हो गया। उन्होंने दिल्ली के एक बड़े अस्पताल में बात कर पति को वहां भर्ती कराने की तैयारी कर ली। उन्हें एंबुलेंस से दिल्ली ले जाने की तैयारी चल रही थी कि स्वास्थ्य विभाग की ओर से बताया गया कि कंप्यूटर एरर की वजह से उनके पति का नाम संक्रमित व्यक्तियों की सूची में शामिल हो गया था। उनके पति की रिपोर्ट वास्तव में निगेटिव आई है। इसके बाद जाकर सांसद और उनके परिवार ने राहत की सांस ली। इस चूक के लिए स्वास्थ्य विभाग और प्रशासन के अधिकारियों से वार्ता भी की गई है। सीएमओ डॉ.जीएस बाजपेई का कहना है कि कंप्यूटर एरर की वजह से सांसद के पति का नाम संक्रमित लोगों की सूची में शामिल हो गया था जो गलत था। उनके पति की रिपोर्ट निगेटिव आई है। परेशान होने की कोई बात नहीं है।

राम मंदिर निर्माण के लिए इंदौर निवासी ने अयोध्या भेजी पोकलेन मशीन

इंदौर, एएनआइ। अयोध्या में राम मंदिर निर्माण होने जा रहा है, जिसे लेकर देशवासी काफी खुश हैं। इतने सालों की इच्छा अब आखिरकार सच होने जा रही है। देशभर के लोग मंदिर निर्माण को लेकर अलग-अलग तरह से अपनी खुशी जाहिर कर रहे हैं, इसमें पूरी तरह से अपना योगदान दे रहे हैं। इंदौर के देवगुराड़िया निवासी दिनेश बेनीवाल ने राम मंदिर निर्माण के लिए पोकलेन मशीन भेजी है जो मंदिर के निर्माण तक अयोध्या में ही रहेगी। मशीन के अयोध्या पहुंचने के बाद भारतीय जनता पार्टी के महासचिव कैलाश विजयवर्गीय ने एक धार्मिक समारोह का आयोजन किया।पोकलेन मशीन भेजने वाले शख्स का नाम दिनेश बेनीवाल है। उन्होंने न्यूज एजेंसी एएनआइ से बात करते हुए कहा कि इस मशीन का इस्तेमाल मंदिर के निर्माण में किया जाएगा।

चेतन चौहान के निधन पर जताया दुःख

नई दिल्ली, एजेंसियां। मशहूर क्रिकेटर और राजनीतिक हस्ती चेतन चौहान का गुरुग्राम के मेदांता अस्पताल में निधन हो गया। वो कोरोना से संक्रमित थे। चेतन चौहान के निधन पर क्रिकेट और राजनीतिक गलियारों में शोक का माहौल है। उनके निधन पर पीएम मोदी ने गहरा दुख व्यक्त किया है। उन्होंने ट्विटर पर लिखा कि चेतन चौहान ने खुद को एक शानदार क्रिकेटर और बाद में एक मेहनती राजनीतिक नेता के रूप में प्रतिष्ठित किया। उन्होंने उत्तर प्रदेश में सार्वजनिक सेवा और भाजपा को मजबूत करने में प्रभावी योगदान दिया। उनके निधन से दुखी हूं। उनके परिवार और समर्थकों के प्रति गहरी संवेदना है। देश के गृह मंत्री अमित शाह ने शोक जताते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री व पूर्व क्रिकेटर चेतन चौहान ने अपने जीवन में पहले एक खिलाड़ी के रूप में और बाद में एक जनसेवक के रूप में देश की सेवा की। उनका निधन भारतीय राजनीति और क्रिकेट के लिए बहुत बड़ी क्षति है। मैं उनके परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूँ।

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने भी गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि यूपी सरकार में कैबिनेट मंत्री चेतन चौहान के निधन के समाचार से बहुत दुख हुआ। वे बेहतरीन क्रिकेटर, जमीन से जुड़े राजनेता और उत्कृष्ट सांसद थे। उनके परिवार, मित्रों और अनगिनत प्रशंसकों के प्रति मेरी शोक संवेदनाएं हैं।

चेतन चौहान के निधन पर उप राष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने शोक व्यक्त

करते हुए ट्विटर पर लिखा कि पूर्व क्रिकेटर और यूपी के मंत्री चेतन चौहान के निधन से गहरा दुख हुआ। उन्होंने भारतीय क्रिकेट में बहुत बड़ा योगदान दिया और दो बार संसद सदस्य के रूप में भी कार्य किया। उनके परिवार और प्रशंसकों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं हैं।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने ट्विटर पर लिखा उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री और पूर्व क्रिकेटर चेतन चौहान के असामयिक निधन से मुझे गहरा दुःख पहुँचा है। अपनी राजनीतिक पारी के दौरान उन्होंने हमेशा जमीन और जनता से जुड़े मुद्दों को उठाया। वे एक नेकदिल और भले व्यक्ति के रूप में जाने जाते थे। उनके शोकाकुल परिवार के प्रति मेरी संवेदनायें हैं।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पूर्व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी, मंत्रिमंडल में मेरे सहयोगी चेतन चौहान के असामयिक निधन का व्यथित कर देने वाला समाचार प्राप्त हुआ। प्रभु श्री राम उनके परिजनों को इस अपार दुख को सहने कचेतन चौहान के निधन पर केंद्रीय राज्य मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि उनके निधन से दुखी हूं। उन्होंने शानदार क्रिकेट खेला और टी-20 विश्व कप की मेजबानी के लिए दिल्ली को तैयार करने में विशेष योगदान दिया। अपनी दूसरी राजनीतिक पारी में उन्होंने सार्वजनिक सेवा में बहुमूल्य योगदान दिया। उनके परिवार के प्रति ईमानदार संवेदना है।

गौरतलब है कि चेतन चौहान भारतीय जनता पार्टी की राजनीति में लंबे समय से सक्रिय भूमिका निभाई। चेतन चौहान भारतीय जनता पार्टी से लोकसभा सांसद भी रहे। 1991 और 1998 के चुनाव में वह भाजपा के टिकट अमरोहा से सांसद बने थे। चेतन चौहान अभी अमरोहा जिले की नौगांवा सादात विधानसभा क्षेत्र से विधायक थे और उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री थे।

प्रतापगढ़ में जमीन के विवाद में पिता-पुत्र की हत्या

मृतक के परिजनों से पूंछताछ करती पुलिस

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ में रविवार को पिता-पुत्र की हत्या से सनसनी फैल गई। गांव में डबल मर्डर की सूचना से तनाव फैल गया। जिससे बाद गांव में पुलिस फोर्स को तैनात कर दिया गया। घटना को संज्ञान में लेते हुए तीन पुलिसकर्मियों को भी निलंबित किया गया है। रविवार सुबह जिले के रानीगंज थाना क्षेत्र के शेखपुर गांव निवासी दयाशंकर मिश्र और चिंतामणि मिश्र में आबादी की जमीन पर कब्जे को लेकर काफी सालों से विवाद चला आ रहा है। इसको लेकर दोनों पक्षों में अक्सर मारपीट भी होती रहती है।

बताते हैं कि रविवार सुबह सुलह को लेकर दोनों पक्षों ने अपने-अपने पक्ष के वकीलों को बुलाया था। दोनों पक्षों में समझौते की बातचीत चल रही थी। देखते ही देखते दोनों पक्षों में विवाद होने लगा। एक-दूसरे पर लाठी-डंडो और कुल्हाड़ी से हमला करने लगे। लाठी-डंडे और कुल्हाड़ी से हुए हमले में दयाशंकर और उनका बेटा आनंद बुरी तरह घाल हो गए। वहीं दूसरे पक्ष से चिंतामणि समेत पांच लोग घायल हो गए। दयाशंकर और बेटे आनंद की अस्पताल में मौत हो गई। पितापुत्र की मौत से गांव में तनाव फैल गया।

दरोगा समेत 3 पुलिसकर्मी निलंबित

प्रतापगढ़ में पिता-पुत्र की हत्या के बाद गांव में आक्रोश है। कार्रवाई न होने पर दोषी पुलिसकर्मियों के विरुद्ध कार्रवाई की गई है। प्रतापगढ़ के पुलिस अधीक्षक अभिषेक सिंह ने मामले का संज्ञान लेते हुए ग्राम शेखपुर के दरोगा राजेश राय और हलके के सिपाही बुद्धन प्रसाद व रामा यादव को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। फिलहाल पुलिस घटना की जांच पड़ताल में जुटी है।

पीएम नरेंद्र मोदी ने दी पारसी नव वर्ष की शुभकामनाएं

नई दिल्ली, एएनआइ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को पारसी नए साल की बधाई दी है और देश में पारसी समुदाय के योगदान की सराहना भी की है। उन्होंने ट्वीट करके समुदाय को इस दिन की बधाई दी। पीएम मोदी ने ट्वीट करते हुए कहा, ₹नवरोज मुबारक! पारसी नव वर्ष पर शुभकामनाएं। भारत, पारसी समुदाय के उत्कृष्ट योगदान की सराहना करता है, इसने व्यापक क्षेत्रों में अपनी छाप छोड़ी है। आने वाला वर्ष सभी के जीवन में शांति और समृद्धि लाए। पारसी भारत में एक छोटा सा अल्पसंख्यक समुदाय है, लेकिन दशकों में विभिन्न क्षेत्रों में प्रख्यात व्यक्तित्वों का उत्पादन किया है। पारसी नव वर्ष को नवरोज भी कहा जाता है। पारसी भाषा में नव का मतलब नया और रोज का मतलब दिन होता है, तो नवरोज को नया दिन कहा जाता है। इस दिन से नए पारसी कैलेंडर की शुरूआत की जाती है। वहीं, देश के उपराष्ट्रपति वैंकेया नायडू ने भी पारसी समुदाय को नव वर्ष की शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने ट्वीट करके कहा, ₹पारसी समुदाय भारत की सांस्कृतिक विविधता का अभिन्न अंग रहा है... जिसने हमारी सांस्कृतिक विरासत में महत्वपूर्ण योगदान किया है। कोरोना महामारी को ध्यान में रखते हुये नवरोज घर पर ही रह कर मनाएं। सावधान रहें, सुरक्षित रहें, स्वस्थ रहें।

नक्सलगढ़ में समर्पित नक्सलियों ने लहराया तिरंगा

दंतेवाड़ा, राज्य ब्यूरो। छत्तीसगढ के दंतेवाड़ा जिले के अति नक्सल प्रभावित चिकपाल, मारजूम और परचेली गांव में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर तिरंगा लहराया गया। मारजूम में फोर्स ने हाल ही में कैंप खोला है, जिससे इलाके में माहौल बदल गया है। बड़ी संख्या में नक्सलवाद का दामन छोड़कर युवा मुख्यधारा में लौटे हैं और करीब 102 समर्पित नक्सलियों ने तिरंगे को सलामी दी है। ये वो समर्पित नक्सली हैं, जो पहले स्वतंत्रता दिवस का विरोध करते हुए काला दिवस मनाते थे और काला झंडा फहराते थे। दंतेवाड़ा जिले के कटेकल्याण थाना के अंतर्गत मारजूम, परचेली, चिकपाल सहित 18 जगह पर 15 अगस्त को तिरंगा

तिरंगो को नमन करते नक्सली

शान से लहराया। इन इलाकों के स्कूल और शासकीय भवनों में अब तक दिवस विशेष पर काला झंडा देखने को लोग विवश थे पर 15 अगस्त को जवान और शासकीय कर्मियों के साथ ग्रामीणों ने भी तिरंगे को सलामी देते जय हिंद के नारे लगाए। बारिश के बावजूद तिरंगा पूरे दिन लहराता रहा। एसपी डॉ. अभिषेक पल्लव ने बताया कि जिले में लोन वर्राटू अर्थात घर वापस आइए अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत दो माह में 150 से अधिक नक्सली समर्पण कर मुख्यधारा में लौट चुके हैं। यही वजह है कि मारजूम जैसे अतिसंवेदनशील गांव में फोर्स पहुंच पाई और ध्वजारोहरण किया गया। जिला मुख्यालय से करीब 60 किमी दूर दुर्गम रास्ते वाले इस गांव में तिरंगा लहराने एएसपी (आइपीएस) उदय किरण और राजेंद्र जायसवाल के नेतृत्व में नदी-नाले पार करते फोर्स पहुंची थी।

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के रिक्त पदों को जल्द भरे केंद्र सरकार : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली, आइएएनएस। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से कहा है कि नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के न्यायिक और विशेषज्ञ सदस्यों की नियुक्ति प्रक्रिया को तेज किया जाए और सभी रिक्त पदों को जल्द भरा जाए। यह निर्देश शीर्ष न्यायालय की जस्टिस एएम खानविल्कर, जस्टिस दिनेश माहेश्वरी और जस्टिस संजीव खन्ना की पीठ ने दिया है। एनजीटी में इस समय सात न्यायिक सदस्यों और छह विशेषज्ञ सदस्यों के पद खाली हैं।

एनजीटी बार एसोसिएशन (वेस्टर्न जोन) की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने 23 जुलाई को भी इस बाबत एक

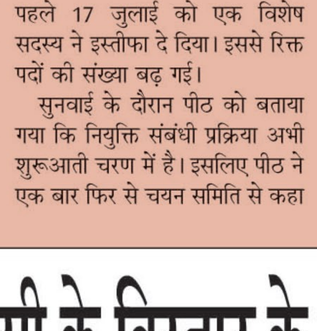

आदेश जारी किया था लेकिन उससे पहले 17 जुलाई को एक विशेष सदस्य ने इस्तीफा दे दिया। इससे रिक्त पदों की संख्या बढ़ गई।

सुनवाई के दौरान पीठ को बताया गया कि नियुक्ति संबंधी प्रक्रिया अभी शुरूआती चरण में है। इसलिए पीठ ने एक बार फिर से चयन समिति से कहा है कि वह अपनी प्रक्रिया में तेजी लाए जिससे रिक्त पदों पर जल्द नियुक्ति हो सके। नियमानुसार एनजीटी में कम से कम दस न्यायिक सदस्य होने चाहिए लेकिन इस समय केवल सात सदस्यों से काम चलाया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि एनजीटी में न्यायिक और विशेषज्ञ सदस्यों की संख्या कम होने की वजह से वहां का कामकाज गति नहीं पकड़ पा रहा है। लंबित मुकदमों की संख्या बढ़ती जा रही है। अब जबकि पर्यावरण संबंधी चुनौतियां बढ़ती जा रही हैं, तब उन पर नजर रखने वाले एनजीटी का कामकाज आवश्यक संख्या बल की कमी से बाधित हो रहा है।

वहीं, दूसरी ओर अभी हाल ही में नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने विभिन्न परियोजनाओं के लिए पर्यावरण मंजूरी से जुड़े नियमों के अनुपालन की अनदेखी पर वन एवं पर्यावरण मंत्रालय को फटकार लगाई थी। ट्रिब्यूनल का कहना था कि पर्यावरण संबंधी नियमों की निगरानी का तंत्र पर्याप्त नहीं है। पर्यावरण मंजूरी की शर्तों का पालन हो रहा है या नहीं, इसकी समय-समय पर निगरानी होनी चाहिए। ऐसा कम से कम तिमाही में एक बार अवश्य होना चाहिए।

'सदैव अटल' पहुंचकर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व अन्य नेताओं ने दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली, एएनआइ। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की आज दूसरी पुण्यतिथि है। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री से लेकर पूरा देश आज उन्हें श्रद्धांजलि दे रहा है। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अटल समाधि स्थल 'सदैव अटल' जाकर पूर्व पीएम को श्रद्धांजलि अर्पित की। पीएम ने ट्वीट कर कहा कि देश के विकास में आपके योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा। शिवराज सिंह चौहान ने पूर्व पीएम को याद करते हुए कहा कि भारत की राजनीति की दिशा अगर किसी ने बदली थी तो वो अटल जी ने बदली थी। उस समय कल्पना नहीं कर सकते थे कि नेहरू जी की टक्कर में कोई खड़ा हो सकता है, कांग्रेस के विरोध की कल्पना ही बड़ी कठिन थी। तब प्रखर राष्ट्रवाद की पताका लेकर अटल बिहारी वाजपेयी बढ़े थे।

भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने अटल समाधि स्थल पर स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की दूसरी पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज पूर्व पीएम अटल बिहारी वाजपेयी को उनकी पुण्यतिथि पर अटल बिहारी वाजपेयी के स्मारक 'सदैव अटल' पर श्रद्धांजलि अर्पित की।इससे पहले पीएम मोदी ने अटल बिहारी वाजपेयी को याद करते हुए एक वीडियो संदेश ट्वीट किया। इस वीडियो संदेश में पीएम मोदी ने कहा, 'यह देश अटल जी के योगदान को कभी नहीं भुला सकता। उनके नेतृत्व में हमने परमाणु शक्ति में भी देश का सिर ऊपर किया। पार्टी नेता हो, संसद सदस्य हो, मंत्री हो या प्रधानमंत्री, अटल जी ने हर भूमिका में आदर्श को प्रतिष्ठित किया।

सीमाई एवं तटीय जिलों में एनसीसी के विस्तार के प्रस्ताव को रक्षा मंत्री ने दी मंजूरी

नई दिल्ली, पीटीआइ। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 173 सीमा और तटीय जिलों में राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) के विस्तार के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। रविवार को एक आधिकारिक बयान जारी कर-के इसकी जानकारी दी गई। बता दें कि एनसीसी के विस्तार की घोषणा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को अपने स्वतंत्रता दिवस के भाषण में की थी। इस दौरान उन्होंने कहा कि सीमा और तटीय जिलों में एनसीसी का विस्तार किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सीमाई एवं तटीय जिलों में लोगों को आपदा प्रबंधन के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा और युवाओं

को सशस्त्र बलों में करियर बनाने के लिए भी प्रशिक्षित किया जाएगा। रक्षा मंत्रालय के बयान में कहा गाय कि राजनाथ सिंह ने एनसीसी को लेकर इस प्रस्ताव को मंजूरी दी है। सीमा और तटीय जिलों में 1,000 से अधिक स्कूलों और कॉलेजों की पहचान की गई है जहां एनसीसी की शुरूआत की जाएगी। रक्षा मंत्रालय ने अपने बयान में यह भी कहा कि 173 सीमा और तटीय जिलों के कुल एक लाख कैडेटों को एनसीसी में शामिल किया जाएगा। उनमें से एक तिहाई लड़कियां होंगी। सीमा और तटीय क्षेत्रों में कैडेटों को एनसीसी प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए इस योजना के तहत कुल 83 एनसीसी इकाइयों (सेना 53, नौसेना 20, वायु सेना 10) को अपग्रेड किया जाएगा। सीमा क्षेत्रों में स्थित एनसीसी इकाइयों को सेना प्रशिक्षण और प्रशासनिक सहायता प्रदान करेगी। इसी तरह नौसेना तटीय क्षेत्रों और वायु सेना अपने स्टेशनों के करीब स्थित एनसीसी इकाइयों को सहायता प्रदान करेगी।

बता दें कि एनसीसी का प्रबंधन सशस्त्र बलों द्वारा किया जाता है। यह सामाजिक सेवाओं, अनुशासन और साहसिक प्रशिक्षण पर जोर देने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में कैडेटों को शामिल होने का अवसर भी प्रदान करता है। इसमें स्वैच्छिक आधार पर सभी स्कूलों और कॉलेजों के नियमित छात्र शामिल हो सकते हैं। एनसीसी विस्तार योजना राज्य सरकारों के साथ साझेदारी में लागू की जाएगी।

ग्रामीण अंचल

प्रयागराज सोमवार, 17 अगस्त, 2020

संक्षेप समाचार

'जनता के प्रधानमंत्री' को हर किसी ने किया याद

शंकरगढ़। माँ भारती के सच्चे सपूत, राष्ट्रपुरुष, मार्गदर्शक, देशभक्त, भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी को आज पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि दी गई। भारत की आत्मा में विराजमान पंडित अटल बिहारी वाजपेयी को आज हर किसी ने न सिर्फ याद किया, बल्कि देशहित में उनके कार्यों को मील का पत्थर करार दिया गया। स्थानीय भाजपा इकाई के अलावा जन सामान्य ने भी जमीन से जुड़े रहने वाले और ह्यह्यजनता के प्रधानमंत्री की कृतियों का पाठ किया। वक्ताओं ने कहा कि श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी ने लोगों के दिलों में अपनी खास जगह बनायी थी। एक ऐसे इंसान जो बच्चे, युवाओं, महिलाओं, बुजुर्गों सभी के बीच में लोकप्रिय थे। देश का हर युवा, बच्चा उन्हें अपना आदर्श मानता था।लोगों ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी ने आजीवन अविवाहित रहने का निर्णय लिया और अपने अंतिम समय तक निर्वहन किया।

स्वतंत्रता दिवस पर शान से लहराया तिरंगा

शंकरगढ़। स्वतंत्रता दिवस का पावन पर्व क्षेत्र में धूमधाम से मनाया गया।कोरोना महामारी के कारण कुछ निजी स्कूलों में सोशल डिस्टेंसिंग के साथ देशभक्ति से ओत प्रोत कार्यक्रम हुए, बच्चों ने भारत माता की जय का उद्घोष किया। इस पावन मौके पर सभी सरकारी, अर्ध सरकारी विद्यालयों, प्राइवेट संस्थानों में तिरंगा फहराया गया और वीर सपूतों की कुबार्नी को याद कर नमन किया गया।

अल्ट्राटेक सीमेंट लिमिटेड यूनिट बारा प्रयागराज में सीनियर जनरल मैनेजर एम.के. बालगी द्वारा ध्वजारोहण कर कर्मचारियों को मास्क और सेनिटाइजर का वितरण किया गया। इस मौके पर प्रोजेक्ट हेड रमेश कुमार नगाईक,टेक्निकल हेड पंकज गुप्ता, एचआर हेड लल्लन सिंह, बृजेश कुमार पांडेय आदि लोग उपस्थित रहे। इसी तरह तहसील बारा परिसर में उपजिलाधिकारी बारा गौरव रंजन श्रीवास्तव ने ध्वजारोहण किया। इस मौके पर तहसीलदार बारा डॉ विशाल शर्मा, कानूनगो प्राची केसरवानी, लेखपाल गंगा प्रसाद आदि लोग मौजूद रहे। इसी तरह वन रेंज कार्यालय शंकरगढ़ में सहायक वन संरक्षक अधिकारी मनीष कुमार सिंह द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस मौके पर डिप्टी रेंजर अवधेश सिंह समेत तमाम वनकर्मी मौजूद रहे।राजा कमलाकर इंटर कालेज में प्रधानाचार्य अनय प्रताप सिंह द्वारा ध्वजारोहण किया गया। विकास खंड मुख्यालय शंकरगढ़ में खंड विकास अधिकारी देवेंद्र कुमार ओझा और एडीओ पंचायत ओम प्रकाश पांडेय ने ध्वजारोहण किया। थाना परिसर शंकरगढ़ में एसओ राजेश उपाध्याय, नारीबारी चौकी में चौकी इंचार्ज जगदीश कुमार द्वारा ध्वजारोहण किया गया। नगर पंचायत कार्यालय शंकरगढ़ में चेयरमैन लल्लू कनौजिया द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस मौके पर लिपिक प्रदीप सिंह, नामित सभासद कमलेश आदिवासी आदि लोग मौजूद रहे। इसी तरह मिनी पैराडाइज प्ले स्कूल लाइनपार में प्रबंधक रोहित केसरवानी और वरिष्ठ समाजसेवी सतीश विश्वकर्मा द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस मौके पर प्रधानाचार्य दिव्या मैम द्वारा समाज में उत्कृष्ट कार्य करने वाले वरिष्ठ समाजसेवी सतीश विश्वकर्मा को शील्ड देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर सोमनाथ वर्मा, मनीष सर, दिव्या मैम आदि लोग उपस्थित रहे। इसी तरह चंद्रशेखर आजाद इंस्टिट्यूट ग्रुप ऑफ एजुकेशन शिक्षक नगर में डायरेक्टर डॉ विवेक श्रीवास्तव, प्रधानाचार्य प्रतिमा श्रीवास्तव ने ध्वजारोहण किया।वहीं चिल्ड्रेन पब्लिक स्कूल शंकरगढ़ में प्रधानाचार्य प्रकाश चंद्र मिश्रा द्वारा ध्वजारोहण किया गया। ग्राम चुंदवा में प्रधान शैलेंद्र सिंह, ग्राम बेमरा में भानु प्रताप सिंह, ग्राम कपारी में प्रधान प्रति रामबाबू सिंह, ग्राम नीबी में प्रधान हरी लाल कनौजिया द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इसी तरह शंकरगढ़ के केसरवानी धर्मशाला में व्यापार मंडल अध्यक्ष मूलचंद गुप्ता और महामंत्री रतन केसरवानी ने ध्वजारोहण किया। इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम में तमाम व्यापारी सम्मिलित हुए।

इसीतरह नारीबारी के ग्राम इटवा में रिटायर्ड उपनिरीक्षक रामभवन त्रिपाठी के आवास पर मुख्य अतिथि कुलदीप पाठक (पूर्व जिला महामंत्री भाजपा) ने ध्वजारोहण किया।

स्वतंत्रता दिवस पर कार्यक्रमों के दृश्य

मारपीट में एक की मौत मुकदमा दर्ज

जमीनी विवाद को लेकर हुई मारपीट

उतरांव। थाना क्षेत्र के कटहरा गांव में जमीन को लेकर विवाद हो गया। जिसमें दोनों पक्षों में लाठी-डंडे चले वही एक पक्ष से लाल प्रताप सिंह उम्र 40 वर्ष पुत्र श्याम नारायण को गंभीर चोटें आई जिसमें इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। उतराव पुलिस ने भाई की तहरीर पर 5 लोगों के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत कर जांच में जुट गई। कटहरा गांव निवासी लाल प्रताप सिंह जो मजदूरी करता था। परिवार में ही उसकी जमीनी विवाद बना हुआ था। शनिवार की रात लगभग 9 बजे के करीब दोनों पक्षों में कहासुनी हुई तथा दोनों पक्ष में मारपीट हो गई। वहीं एक पक्ष लाल प्रताप सिंह को गंभीर चोट आने से परिजनों ने अस्पताल में भर्ती कराया जहां इलाज के दौरान की मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वही मृतक के भाई की तहरीर पर पुलिस ने पांच लोगों के खिलाफ गैर इरादतन हत्या व अन्य संगीन धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर कार्रवाई में जुट गई। मृतक तीन भाइयों में सबसे छोटा था। एक भाई की पहले ही मृत्यु हो चुकी थी। वहीं मृतक के एक बेटी है। कई वर्ष पूर्व पत्नी से विवाद होने के कारण तलाक हो चुका था।लाल प्रताप सिंह की मौत से परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया है।

रोते बिलखते मृतक के परिजन

स्वतंत्रता दिवस पर गंगादूतों के द्वारा निकाली गई जागरूकता रैली

प्रयागराज। स्वतंत्रता दिवस पर चाका ब्लॉक के देवरख ग्राम पंचायत में नेहरु युवा केन्द्र ,नमामि गंगे ,प्रयागराज के अंतर्गत गंगा दूतों के द्वारा गंदगी मुक्त भारत अभियान के तहत गंगा स्वच्छता अभियान पर सोशल डिस्टेंसिंग का ध्यान रखते हुए जागरूकता रैली का अयोजन किया गया। गंगादूतो ने गंगा साफ सफाई पर नारे लगा कर ग्रामीणों को जागरूक किया तथा मास्क व हेन्ड गलब्स वितरित किया । ग्राम में स्थित शहीद स्थली पर पुष्पांजलि अर्पित कर ध्वाजारोहण किया गया, तथा न्यू इण्डिया की शपथ दिलाई गई और वृक्षारोपण किया गया।कार्यक्रम में मुख्य रूप से स्वयं सेवक रवि, गंगा दूत अंजली, कोमल, खुशी, कामनी, आराधना, नैना, रूचि, संजुला,प्रियंका, अंजली, खुशी, रवि भाष्कर, धीरेंद्र सिंह, तथा युवा मण्डल अध्यक्ष अंकित की सहभागिता रही । यह कार्यक्रम जिला परियोजना अधिकारी (नमामि गंगे), एषा सिंह के निर्देशन में किया गया।

74वें स्वतंत्रता दिवस पर किया गया झंडा रोहण

सिरसा। मेजा क्षेत्र में विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी स्कूलों,कालेजो व कार्यालयों सहित व्यपारियो प्रतिष्ठानो व निजी आवास पर 74वां स्वतंत्रता दिवस पर किया गया झंडा रोहण। कोरोना वायरस संक्रमण बीमारी को देखते हुए समाजिक दूरी और माउथ मास्क एवं सैनिटाइजर से बचाव करते हुए महात्मा गाँधी के चित्र पर माल्यार्पण व दिप प्रज्ज्वलित कर ध्वजा रोहण किया गया और 74वे स्वतंत्रता दिवस पर उन शहीदों को नमन करते हुए उनकी श्रधांजलि अर्पित किया गया। बिलिएंट पब्लिक स्कूल ग्रामपंचायत बरी,उरुवा में संदीप कुमार मिश्रा(अम्बुज) भाजपा नेता मण्डल उपाध्यक्ष मेजा ने कहा कि स्वत्रंत्रता संग्राम सेनानियों के त्याग व तपस्या की बदौलत बड़ी कठिनाई से देश को आजादी मिला है। ग्रामपंचायत रामनगर बाजार में भगवान दास प्रजापति भाजपा नेता सेक्टर संयोजक रामनगर उरुवा, मोती लाल धनगर (समाज सेवी), देवेश कुमार यादव(समाज सेवी),शमशेर सिंह यादव,इंजीनियर इम्तियाज अली एवं नीरज कुमार सिंह यादव(सपा लोहिया वाहनी,प्रदेश सचिव), दिवाकर सिंह यादव एडोकेट, विजय राज सिंह यादव(सपा नेता),डॉक्टर राजेन्द्र बिन्द, नगरपंचायत सिरसा कार्यालय पर श्याम कृष्ण सिंह यादव (पप्पू) चेयरमैन विधानसभा मेजा अध्यक्ष, सुरेश कुमार सिंह यादव सभासद, विनय कुमार यादव सभासद, लवकुश कुमार यादव नेता,रामशिरोमणि यादव नेता जी,दीपू सिंह, अरविन्द कुमार सिंह यादव(प्रधान जी)एवं समस्त सभासद,अमिलहवा चौराहा शिवा जी पांडेय नेता जी,जय शंकर सिंह यादव(बबलू) समाज सेवी,रचित कुमार विश्वकर्मा नेता जी,हरिओम यादव,विमल कुमार यादव सपा नेता, मुन्नी लाल यादव,जोगेन्दर प्रताप सिंह यादव, हरि शंकर शर्मा(पप्पू टिकैत) नेता सपा कठौली मेजारोड, श्रीमती नीलम उदयभान करवरिया विधायक प्रतिनिधि शैलेश कुमार पांडेय ने विधायक के कार्यालय लखनपुर मेजारोड में झंडा रोहण किये। भारतीय पत्रकार वेलफेयर एसोसिएशन कार्यालय मेजारोड में पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेश कुमार शुक्ला(पत्रकार) कर्यवाहक राष्ट्रीय अध्यक्ष शकील अहमद (एडोकेट/पत्रकार) विनोद कुमार सिंह मीडिया प्रभारी (पत्रकार),राजेश कुमार गौड़ (पत्रकार), चौधरी माता प्रसाद विद्यलय प्रधानाचार्या श्रीमती शिलोत्तमा, प्रबंधक यज्ञ नारायण सिंह यादव,जिया लाल यादव,शारदा प्रशाद, श्रीमतीं माधुरी।लोहारी /सिरसा कार्यालय में श्यामराज सिंह यादव भाजपा नेता मण्डल अध्यक्ष सिरसा।स्वधीनता आंदोलन में सभी जाति और धर्मो के लोग ने भाग लिया था।अमर शहीदों ने आजाद भारत का जो एक सपना देखा था उसे साकार रूप देने की जिम्मेदारी हम सभी की है।जिन्होंने देश की गुलामी जंजीरों से मुक्त कराने में अपने प्राणों का बलिदान कर दिया था।

जमीनी विवाद में वृद्ध की पीट-पीटकर हत्या

करछना। थाना क्षेत्र के गंधियांव गांव के मजरा मदार्पुर में शनिवार की दोपहर दो पक्षों में जमीनी विवाद को लेकर जमकर मारपीट हो गयी जिसमें एक पक्ष के लोगो ने एक वृद्ध की लाठी.डंडों से पीट.पीटकर हत्या कर दी। मारपीट की घटना में कई लोग घायल हो गये। मदार्पुर गांव में जमीनी विवाद को लेकर कई सालों से चली आ रही खुन्नस शनिवार के दिन खूनी रूप ले लिया। जिसमें दिनेश कुमार पाण्डेय पुत्र लल्लन पाण्डेय व वीरेन्द्र कुमार पाण्डेय के बीच कई वर्षो से जमीनी विवाद को लेकर पुरानी खुन्नस चली आ रही है। जिसका मुकदमा न्यायालय में विचाराधीन चल रहा है। लेकिन शनिवार को दोनो पक्षों में किसी बात को लेकर कहासुनी हुयी और देखते ही देखते मामला मारपीट में बदल गया और दोनो पक्ष लाठी डंडे और धारदार हथियार से आमने सामने हो गये और जमकर मार हुयी। मारपीट में दिनेश कुमार पाण्डेय व उनके लड़के राकेश पाण्डेयए अनिल कुमार व सुशील गंभीर रूप से घायल हो गये। जिसमें दिनेश कुमार पाण्डेय को धारदार हथियार से गंभीर चोटे आयी थी जिनको शनिवार को एसआरएन में भर्ती कराया गया था जहां रविवार को उनकी इलाज की दौरान मौत हो गयी। मृतक दिनेश कुमार पाण्डेय के लड़के अजय कुमार पाण्डेय ने 9 के खिलाफ नामजद तहरीर दिया है जिसमें वीरेन्द्र कुमारए रावेन्द्र उर्फ कोमलए सुरेन्द्र कुमार ए मनोज कुमारए रत्नेश कुमारए सचिन कुमारए प्रवीण कुमारए अमन व मोनू के खिलाफ तहरीर दिया गया है। जिसमें वीरेन्द्र कुमार पाण्डेय 55 और रावेन्द्र कुमार उर्फ कोमल 50 को गंभीर चोटे आयी है। जिन्हे एसआरएन में भर्ती कराया गया और इलाज चल रहा है। वहीं मृतक दिनेश पाण्डेय की पत्नी गायत्री देवी व बच्चों का को रो.रोकर बुरा हाल रहा। अस्पताल में मौत के बाद परिजन बिना पोस्टमार्टम को शव को अपने घर उठा लाये। पुलिस शव का पोस्टमार्टम कराने के लिए परिजनों से बातचीत कर प्रयास कर रही है। मारपीट दिनेश कुमार पाण्डेय की मौत हो जाने से गांव में तनाव व्याप्त है जिससे एतिहातन पुलिस बल तैनात की गयी है।

करछना में एक सप्ताह में मारपीट में यह तीसरी हत्या

करछना। तहसील क्षेत्र में एक सप्ताह के भीतर जमीन से सम्बन्धित विवाद में तीसरी हत्या हो जाने से लोग सहमे हुए है। एक सप्ताह पहले टकटैया गांव में रास्ते के विवाद को लेकर दो सगे भाईयों को लाठी डंडे से मारपीटकर मौत के घाट उतार दिया गया था। यह मामला शान्त नही हुआ था कि शनिवार को यह दूसरी घटना हो गयी। क्षेत्र के कई गांवों में जमीन से सम्बन्धित विवादों का निस्तारण समय से न होने के कारण अपराध में वृद्धि हो रही है जिससे कारण हत्याओं का ग्राफ बढ़ रहा है।

जसरा में 74 वां स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया

जसरा । क्षेत्र के सभी सरकारी, अर्ध सरकारी व निजी संस्थानों में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर झंडारोहण व राष्ट्रगान के साथ सामाजिक दूरी बनाकर स्वतंत्रता दिवस मनाया गया ।

जसरा के ईश्वरदीन छेदीलाल इंटर कॉलेज जसरा के प्रबंधक विश्वनाथ प्रसाद गुप्त व प्रधानाचार्य डा०योगेन्द्र सिंह, लालचंद इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ० पी० पी० सिंह यमुनापार इंटर कॉलेज अमरेहा के प्रधानाचार्य श्याम सुंदर त्रिपाठी, केदारनाथ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खटंगिया के प्रबंधक मातादीन मिश्र, श्रीनाथ सत्यनारायण इंटर कॉलेज के प्रबंधक श्याम सुंदर त्रिपाठी, मोतीलाल प्राथमिक विद्यालय बुदांवा की प्रबंधक श्यामा देवी शुक्ला, सरस्वती शिशु मंदिर जसरा के प्रबंधक लक्ष्मी नारायण मिश्र, केडी कानवेंट में महेन्द्र प्रसाद शुक्ल, ज्ञान भारती विद्यालय के प्रधानाचार्य रत्नेश मिश्रा के अतिरिक्त सभी प्राथमिक विद्यालय, बैंक, रेलवे स्टेशन, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जसरा के अधीक्षक डॉ०तरुण पाठक, विकास खंड कार्यालय जसरा में बीडिओ देवेंद्र कुमार ओझा, किसान सेवा सहकारी समिति जसरा में अध्यक्ष राजेश त्रिपाठी, जसरा युवा संगठन के कार्यकताओं ने कैलाश धाम मंदिर में माता दिन मिश्र से झंडारोहण कराया। इस अवसर पर दीपू पाठक, अरविंद दुबे, अतुल दुबे, अंशु, उज्जवल, राजेश आदि ने झंडारोहण कर राष्ट्रगान गाया । इस अवसर पर उपस्थित लोगों ने तिरंगे को सलामी दी।

स्वतंत्रता दिवस पर झण्डारोहण करते हुए

बाबूगंज के परिषदीय विद्यालय में एसडीएम ने किया ध्वजारोहण

फूलपुर। फूलपुर विकास खण्ड के बाबूगंज परिषदीय विद्यालय में 74वां स्वाधीनता दिवस शनिवार को उपजिलाधिकारी की गरिमामई उपस्थिति में मनाया गया। उपजिलाधिकारी विवेक चतुवेर्दी व खण्ड विकास अधिकारी सुभाष चन्द्र त्रिपाठी ने राष्ट्रीय ध्वज को फहराते हुए आजादी के नायकों को याद किया। ध्वजारोहण के पश्चात सामूहिक रूप से राष्ट्रगान का भी गायन हुआ। जन प्रतिनिधियों एवं उपस्थित कर्मचारियों को स्वतन्त्रता दिवस की बधाई देते हुए एसडीएम विवेक चतुवेर्दी ने कहा कि हमारे देश को आजाद कराने वाले अमर शहीदों को कभी भुलाया नहीं जा सकता। वहीं खण्ड विकास अधिकारी सुभाष चन्द्र त्रिपाठी ने आजादी के नायकों को पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। ग्राम पंचायत अधिकारी धीरेंद्र कुशवाहा ने कहा कि देश को मिली आजादी अमर शहीदों द्वारा दी गई कुर्बानियों का प्रतिफल हैं। ग्राम प्रधान प्रतिनिधि रामलखन पटेल ने उपस्थित अतिथियों का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। इस मौके पर ग्राम प्रधान संगीता देवी, मो०इकराम, ग्राम पंचायत अधिकारी शशि यादव, राजस्व निरीक्षक सुप्रीम सिंह, लेखपाल रामबाबू सरोज, विनय सिंह, अजय गुप्ता, विजय चंद्र विश्वकर्मा, अवधेश कुमार, चिंतामणि सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

ध्वजारोहण करते एसडीएम फूलपुर

अवैध तमंचा व चोरी की मोबाइल बरामद, आरोपी जेल

कोरांव। कोरांव पुलिस ने अवैध तमंचा, चोरी की मोबाइल व कसेहडी बरामद पर दोनों आरोपियों को सलाखों के पीछे भेज दिया है। नगर पंचायत कोरांव निवासी सद्दाब उर्फ शादाब पुत्र गुल्ली के पास दो चोरी का मोबाइल आइटेल कम्पनी व दो कसेहड़ी चोरी की पुलिस ने बरामद की है। उक्त युवक काफी दिनों से चोरी का काम करता था। इसी प्रकार कोरांव के जोकहाई गांव से एक अवैध तमंचा राइफल व 15 जिंदा कारतूस 15 बोर मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने छापेमारी करते हुए बरामद कर ली है। गिरफ्तारी टीम में उपनिरीक्षक संजय सोनकर, उपनिरीक्षक राम हरीश यादव, कांस्टेबल लकी यादव, कांस्टेबल वीरेंद्र कुमार व कांस्टेबल राहुल कुमार सामिल है। कोरांव पुलिस की इस कार्यवाही सर हड़कंप मचा रहा।

विद्यालय की बाउंड्री वॉल का भी उप जिलाधिकारी ने किया शिलान्यास

फूलपुर। फूलपुर विकास खण्ड के संविलयन विद्यालय बाबूगंज में बनी चहारदीवारी का शिलान्यास उपजिलाधिकारी फूलपुर विवेक चतुवेर्दी ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर किया। राजस्व निरीक्षक सुप्रीम सिंह ने बताया कि बाबूगंज में रास्ते को लेकर वर्षों से विवाद चला आ रहा था नतीजतन ग्रामीणों का आवागमन विद्यालय परिसर से ही होता था। उपजिलाधिकारी के निर्देशन में विद्यालय के बाहर सडक का नवनिर्माण करवा दिया गया। वहीं विवाद खत्म होने पर खण्ड विकास अधिकारी सुभाष चन्द्र त्रिपाठी के दिशा निर्देश में ग्राम पंचायत अधिकारी धीरेंद्र कुशवाहा व ग्राम प्रधान ने बाउन्ड्रीवाल का निर्माण कर विद्यालय को एक नया रुप देने का काम किया। नए रास्ते के निर्माण होने के साथ ही विद्यालय की चहारदीवारी बनने से ग्रामीणों में खुशी ब्याप्त है। उन्होंने राजस्व विभाग के अधिकारियों के साथ ही ग्राम प्रधान को धन्यवाद दिया।

शिलान्यास करते उपजिलाधिकारी

आत्म भारत की संकल्पना पुरातन काल से: डॉ गिरीश चंद्र त्रिपाठी

प्रयागराज। आत्म भारत की संकल्पना पुरातन काल से है, जिसका सम्बंध हमारे ऋषियों से महर्षियों तथा वैज्ञानिक पद्धति से है। जिसके आधार पर हम लोगों के सामने एक नए भारत का निर्माण हो रहा है। इसके मुख्य आधार हमारे महापुरुष तब भी थे और आज भी हैं। उक्त विचार उच्च शिक्षा परिषद के अध्यक्ष एवं डॉ. गिरीश चंद्र त्रिपाठी ने राजापुर स्थित रानी रेवती देवी इण्टर कालेज में महर्षि अरविंद घोष की जयंती पर संबोधित करते हुए व्यक्त किया। इस दौरान उन्होंने महर्षि के जीवन पर बड़े ही सारगर्भित ढंग से प्रकाश डाला। विद्यालय में महर्षि अरविंद घोष की जयंती बड़े ही हर्षोल्लास वातावरण में ऑनलाइन के माध्यम से मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय की शिक्षिकाओं ऋचा गोस्वामी, दीक्षा पांडेय, पायल जायसवाल, अर्चना राय एवं किरन सिंह ने संस्कृत गीत भाति में भारतम तथा विद्यालय के संगीताचार्य मनोज गुप्ता ने है प्रीत जहां की रीत सदा, मैं गीत वहां के गाता हूं प्रस्तुत करके उपस्थित अतिथियों एवं श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

प्रयागराज हलचल

प्रयागराज सोमवार, 17 अगस्त, 2020

संक्षेप समाचार

सुना रहा तिरंगा बिना प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र

लालापुर। लालापुर में 15 अगस्त को लालापुर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में ध्वजारोहण नहीं किया गया।शनिवार को हर जगह ध्वजारोहण किया गया लेकिन लालापुर स्वास्थ्य केंद्र में फार्मासिस्ट दिनेश कुमार सिंह न तो ध्वजारोहण किया और नही किसी को करने दिया। इस संबंध में वार्ड बाय सांवरे लाल शुक्ला ने बताया कि फार्मासिस्ट दिनेश कुमार सिंह मना किया था कि तुम चतुर्थ क्लास के कर्मचारी हो इसलिए तुम ध्वजारोहण नहीं करना इसलिए अस्पताल में न तो डॉक्टर है और न ही फार्मासिस्ट मौजूद थे इसलिए ध्वजारोहण नहीं किया गया।इस संबंध अधीक्षक डॉ०शैलेंद्र सिंह ने कहा कि अगर स्वास्थ्य केंद्र में ध्वजारोहण नहीं किया गया तो यह गलत है,इसकी जांच की जाएगी।

सोशल डिस्टेंसिंग के तहत मनाया स्वतंत्रता दिवस

प्रयागराज। मण्डलायुक्त आर0 रमेश कुमार शनिवार को स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) के अवसर पर आयुक्त कार्यालय परिसर में झण्डारोहण किया। इस अवसर पर अपने सम्बोधन में उन्होंने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा अन्य लोगो को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि आज का दिवस बहुत ही महत्वपूर्ण है। बहुत ही संघर्ष, त्याग एवं बलिदान के बाद आजादी प्राप्त हुई है। उन्होंने कहा कि अमर शहीदों एवं वीर बलिदानियों ने जो सपना देखा था, उसको साकार करना हम सभी का दायित्व है। उन्होंने कहा कि जो भी जहां भी जिस पद पर या जिस किसी भी कार्य में लगा है, अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक, ईमानदारी एवं लगन से निर्वहन करते हुए देश के विकास में अपना योगदान प्रदान करें। समाज के अंतिम व्यक्ति तक को सरकार द्वारा संचालित योजनाओं से लाभान्वित करायें। उन्होंने कहा कि देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले अमर शहीदों के लिए यहीं सच्ची श्रद्धांजली होगी। उन्होंने कहा कि जो भी व्यक्ति न्याय की आशा में आता है, हम सबका दायित्व है कि ईमानदारी एवं पारदर्शिता के साथ उसकी समस्या का समाधान करें। उन्होंने कहा कि सरकार की मंशा के अनुसार ह्यह्यसबका साथ सबका विकास एवं सबका विश्वासह्ल के सिद्धांत पर कार्य करते हुए समाज के अन्तिम व्यक्ति तक योजनाओं को पारदर्शिता के साथ क्रियान्वित करते हुए पात्र लोगो को लाभान्वित करायें। मण्डलायुक्त ने कहा कि कोविड-19 महामारी से हम सबकों मिलकर लड़ना है साथ ही साथ आर्थिक गतिविधियों को भी आगे बढ़ाना है। उन्होंने कहा कि सभी लोग कोविड-19 के संक्रमण से बचने के लिए मास्क लगाये, सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें तथा इस सम्बंध में निर्धारित मानकों का पूर्ण रूप से पालन करें। साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दें। इस अवसर पर अपर आयुक्त प्रशासन-श्री भगवान शरण तथा आयुक्त कार्यालय के अन्य अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

आयुक्त कार्यालय परसर पर झण्डारोहण करते मण्डलायुक्त

बंद मकान का ताला तोड़कर चोरों ने लाखों रुपए के जेवरात ले उड़े

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के देवरख रोड स्थित सरस्वती पुरम कॉलोनी में चोरों ने मौका पाते ही एक बंद मकान का ताला तोड़कर सोने चांदी से निर्मित जेवरात समेत अन्य उपकरण पर हाथ साफ कर फरार हो गए। तहरीर मिलने पर पुलिस ने नैनी कोतवाली में अज्ञात चोरों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है। जानकारी के मुताबिक नैनी कोतवाली क्षेत्र स्थित देवरख रोड के समीप सरस्वतीपुरम कॉलोनी निवासी आशुतोष मिश्रा पुत्र स्वर्गीय गुलाब चंद्र मिश्रा बीते 7 अगस्त को वह अपने अल्लापुर स्थित ससुराल परिवार समेत गए हुए थे।शुक्रवार को वह वापस नैनी स्थित अपने घर पर पहुंचे तो बंद मकान का ताला टूटा देख दंग रह गए। भुक्तभोगी के मुताबिक चोर मौका पाते ही दो कमरों का ताला तोड़कर अंदर दाखिल हो गए और आलमारी का लॉक तोड़ कर उसमें रखे लाखों रुपए के सोने चांदी से निर्मित जेवरात, कलाई घड़ी, मोबाइल समेत अन्य उपकरण चोरी कर फरार हो गए।

जिलाधिकारी ने कलेक्ट्रेट परिसर में किया झण्डारोहण

ध्वजारोहण के बाद तिरंगे झण्डे की सलामी लेते व गांधी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर नमन करते जिलाधिकारी

प्रयागराज। जिलाधिकारी भानुचन्द्र गोस्वामी ने स्वतंत्रता दिवस(15 अगस्त) के अवसर पर शनिवार को कलेक्ट्रेट परिसर में झण्डारोहण किया तथा गांधी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर उन्होंने अधिकारियों एवं कर्मचारियो तथा अन्य लोगो को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह हम सब के लिए प्रसन्नता का अवसर है। 15 अगस्त, 1947 में भारत को मिली आजादी के बाद हमें अपने राष्ट्र और मातृभूमि में सारे मूलभूत अधिकार मिले। अमर शहीदों के त्याग एवं बलिदान के फलस्वरूप प्राप्त लोकतांत्रिक व्यवस्था के मानदण्डों की रक्षा करते हुए राजनैतिक स्वाधीनता के साथ-साथ सामाजिक स्वाधीनता प्राप्त करने हेतु हम निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। राष्ट्र एवं समाज के निर्माण का आधार प्रेम एवं सद्भावना है। समाज के हर वर्ग को न्याय दिलाना तथा देश के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर कार्य करना ही हमारी स्वतंत्रता का असली उद्देश्य एवं लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि देश को आजादी दिलाने में अनगिनत लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दी है। हम सभी उनके सपनों को साकार करने के लिए अपने कर्तव्यों एवं दायित्वो का निष्ठा एवं इमानदारी से निर्वहन करते हुए देश के विकास में अपना सहयोग प्रदान करे एवं देश को विकास के सर्वोच्च शिखर तक ले जाय, यही अमर शहीदों के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

खण्ड शिक्षा अधिकारी परीक्षा में 44.18 प्रतिशत उपस्थिति

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग, प्रयागराज द्वारा रविवार को आयोजित खण्ड शिक्षा अधिकारी (प्रा.) परीक्षा में कुल उपस्थिति 44.18 प्रतिशत रही। यह जानकारी आयोग के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी पुष्कर श्रीवास्तव ने देते हुए बताया है कि उक्त परीक्षा प्रदेश के 18 जनपदों के 1127 परीक्षा केन्द्रों पर एक सत्र में बारह से दो बजे तक आयोजित करायी गई। प्रयागराज में कुल 106 परीक्षा केन्द्र थे। जिसमें परीक्षा सकुशल, निर्विघ्न एवं शुचिता पूर्वक सम्पन्न हुई। कोई अप्रिय घटना नहीं हुई।

यूपी में प्रयागराज प्रथम नगर निगम बना

प्रयागराज। एक्सिस बैंक के सहयोग से उत्तर प्रदेश में प्रयागराज प्रथम नगर निगम बना। जिसने सर्वप्रथम नेशनल पेमेन्ट कापोर्रेशन आफ इंडिया (एनपीसीआई) भारत सरकार के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश में (बीबीपीएस) भारत बिल पेमेन्ट सिस्टम के माध्यम से गृहकर, जलकर तथा सीवर कर जमा करायेगा। इसके लिए एक्सिस बैंक द्वारा नगर निगम को पीओएस मशीन दिया जायेगा। जिसका उद्घाटन शनिवार को महापौर ने किया। महापौर अभिलाषा गुप्ता ने बताया कि इससे चार प्रकार के कर नगर निगम प्रयागराज संग्रहित कर सकेगा। डोर-टू-डोर टैक्स कलेक्शन, पेयजल कर तथा सीवर कर, गन्दगी करने वालों के विरूद्ध जुमार्ना तथा ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन चार्ज या यूजर चार्ज, स्पॉट फाईन या शमन शुल्क तथा जुमार्ना आदि मौके पर जमा किया जा सकता है। कर दाताओं द्वारा उनके डेबिड कार्ड, केडिट कार्ड तथा भीम ऐप द्वारा पेटीएम, गूगल-पे, यूपीआई इत्यादि के माध्यम से मौके पर ही अपने करों का समय से भुगतान कर सकेगा। इसी प्रकार जेम पोर्टल पर नगर निगम की प्रत्येक खरीद फरोख्त पर ई-पेमेन्ट भी इसी प्रकार से किया जायेगा।

इस अवसर पर एक्सिस बैंक की ओर से नगर निगम के अधिकारीगण पी.के मिश्र, सदानन्द मिश्र, उत्तम कुमार वर्मा, सतीश कुमार तथा मणिशंकर त्रिपाठी को शील्ड देकर सम्मानित किया गया तथा नगर निगम प्रयागराज द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर निगम कर्मचारियों के होनहार छात्रों को छात्रवृति दी गयी।

इसके पूर्व कोरोना महामारी के दृष्टिगत स्वतंत्रता दिवस पर नगर निगम में समस्त अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण उपस्थित हुए। महापौर ने स्वतंत्रता दिवस के इस पावन पर्व को मनाते हुए ध्वजारोहण किया एवं सदन हाल में महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इस कार्यक्रम में रवि रंजन नगर आयुक्त, मुशीर अहमद, अमरेन्द्र वर्मा, रत्न प्रिया अपर नगर आयुक्त, सदानन्द मिश्र मुख्य वित्त एवं लेखाधिकारी, सतीश कुमार मुख्य अभियन्ता, पी.के मिश्र मुख्य कर निर्धारण अकिधारी, उत्तम कुमार वर्मा नगर स्वास्थ्य अधिकारी, दीपक कटियार मैनेजर एक्सिस बैंक तथा योगेश बाजपेई ब्रांच मैनेजर एक्सिस बैंक तथा नगर निगम परिवार के समस्त अधिकारीगण एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

आजमगढ़ में छात्रों का परीक्षा केन्द्र बदला, सील विद्यालय खोलने पर विचार से इन्कार

प्रयागराज। उ.प्र गिरोहबंद एवं समाज विरोधी क्रियाकलाप निवारण अधिनियम के तहत कार्रवाई में सील किए गए महाविद्यालय के छात्रों का परीक्षा केन्द्र बदल दिया गया है और परीक्षा भी टल गयी है। अब परीक्षा 17 अगस्त के बजाय दो सितम्बर से शुरू होगी। जिलाधिकारी के आदेश से सील गिरजाशंकर सिंह कृषि महाविद्यालय आजमगढ़ के स्थान पर बद्री प्रसाद महाविद्यालय आरिफपुर को परीक्षा केन्द्र बनाया गया है। जहां छात्रों की परीक्षा होगी। यह जानकारी अपर महाधिवक्ता नीरज त्रिपाठी ने कुमारी मधुबरी की याचिका की सुनवाई कर रही इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति रमेश सिन्हा की एकलपीठ को दी। याचिका में जिलाधिकारी द्वारा गिरजा शंकर सिंह कृषि महाविद्यालय भवन सील करने का आदेश रद्द कर छात्रों की परीक्षा कराने के लिए खोलने की मांग की गयी थी। कोर्ट ने पिछली तिथि पर अपर महाधिवक्ता से पूछा था कि क्या गिरजाशंकर सिंह कृषि महाविद्यालय आजमगढ़ के भवन में या किसी वैकल्पिक अन्य स्थान पर छात्रों की 17 अगस्त से होने वाली परीक्षा करायी जा सकती है ? कोर्ट के निर्देश पर डीएम आजमगढ़ से जानकारी हासिल कर अपर महाधिवक्ता ने परीक्षा केन्द्र बदलने की कोर्ट को सूचना दी। कोर्ट ने महाविद्यालय भवन सील करने के मुद्दे पर विचार नहीं किया। केवल छात्रों की परीक्षा कराने के मुद्दे पर सुनवाई की। सरकार द्वारा कालेज से नजदीक ही परीक्षा केन्द्र तय करने की जानकारी के बाद याचिका निस्तारित कर दी गयी है।

किसानों नौजवानों के समर्थन में कचरी से मुकदमा वापसी मार्च शुभारंभ

प्रयागराज। भूमि अधिग्रहण को लेकर प्रयागराज जिले के कचरी गांव से 15 अगस्त को किसान नौजवान मोर्चा ने ह्लमुकदमा वापसी मार्चह्ल का 74वें स्वतंत्रता दिवस के दिन शुरूआत की। मोर्चा के संयोजक ब्रजेंद्र प्रताप सिंह ने कई वर्षों से संघर्ष कर रहे जेल यात्रियों और उनके परिजनों का सम्मान करने के बाद पदमार्च की शुरूआत किया। मोर्चा के संयोजक ब्रजेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि यह मार्च गांव की सीमा तक किए गए हैं, ताकि सरकार को वक्त दिया जा सके। सरकार मुकदमा वापसी की प्रक्रिया शुरू करे। अन्यथा गांव-गांव में स्थगित किए गए मुकदमा वापसी मार्च लखनऊ की तरफ आगामी दिनों में कूच शुरू कर देंगे। इस गाँव के दो दर्जन से अधिक महिला और पुरुष जेल भेजे गए थे। वे लगातार संघर्ष कर रहे हैं। बच्चों की पढ़ाई छूट गई, कई लोगों की नौकरी चली गई। गैंगस्टर लगा, 50 हजार का ईनाम घोषित किया गया। सरकार ने अनेक लोगों के मुकदमे वापस लिए लेकिन किसानों के मुकदमे नहीं वापस लिए। कानपुर, उन्नाव, फतेहपुर, हमीरपुर, मिजार्पुर, प्रयागराज, प्रतापगढ़, देवरिया, उरई, झांसी, लखीमपुर, गोरखपुर, बस्ती, बरेली, सोनभद्र समेत अन्य जिलों में मोर्चा के सदस्यों ने फेसबुक पर लाइव होकर किसानों और नौजवानों के हक में अपनी आवाज बुलंद की। किसान नौजवान मोर्चा ने चेताया कि राजनीतिक पार्टियों को सचेत हो जाना चाहिए। अगर किसान हित के खिलाफ फैसले होंगे, नौजवानों के हित के खिलाफ फैसले होंगे तो सरकारें बेदखल हो जाएंगी। उत्तर प्रदेश में किसानों के खिलाफ भूमि अधिग्रहण के नाम पर जबरदस्त मनमानी की गई है। सियासी दलों ने राजनीतिक फायदे के लिए किसान को जातियों में विभाजित कर दिया है। ब्रजेंद्र सिंह ने कहा कि उत्तर प्रदेश के हजारों किसानों के खिलाफ भूमि अधिग्रहण की मनमानी के विरोध पर, बिजली के दामों में वृद्धि के विरोध पर, सिंचाई के समस्याओं को लेकर मंडी परिषद की मनमानी के खिलाफ बात कहने पर, अनाज गोदामों तक भेजने के लिए, धान गेहूं और अन्य फसलों की बिक्री के दौरान मनमानी का विरोध करने पर, नौकरियों में भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने पर किसानों के खिलाफ मुकदमें दर्ज किए गए हैं। उ0प्र0 के साथ मध्य प्रदेश, झारखंड, बिहार, हरियाणा, पंजाब गुजरात, महाराष्ट्र में भी किसानों के साथ बर्बरता हुई है। उन प्रदेशों में भी दर्ज मुकदमे वापस किए जाएं। कचरी गाँव में मोर्चा की केंद्रीय टीम के साथ एडवोकेट रितेश श्रीवास्तव, दिनेश तिवारी, प्रभाकर सिंह पटेल, अमित कुमार, दिनेश शुक्ला, पवन मिश्र समेत अन्य किसान नौजवान मौजूद रहे।

रोटरी इलाहाबाद इलीट ने स्वतंत्रता दिवस मनाया

प्रयागराज। स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर रोटरी इलाहाबाद इलीट ने एसोसिएशन ग्राउंड प्रयागराज में ध्वजारोहण के उपरांत वृहद वृक्षारोपण भी किया। इस अवसर पर दो महान हस्तियों को सम्मानित भी किया जो कोविड 19 कोरोना वायरस जैसी महामारी से लड़ने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। डॉ. मोहित जैन और डॉ. ऋषि सहाय को प्रशासन की तरफ से नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। जिन्हें अध्यक्ष संजय तलवार ने प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. सुनील वर्मा जॉर्ज टाउन एसोसिएशन के सचिव को पौधा देकर सम्मानित किया गया। सभासद आकाश सोनकर के सहयोग से वृहद वृक्षारोपण का कार्यक्रम हुआ। जिसमें लगभग 20 प्रजातियों के लगभग सौ पौधे लगाए गए। कार्यक्रम में डॉ. ऋतु जैन सहित पूर्व अध्यक्ष रोटेरियन रितेश सिंह, पीयूष अग्रवाल, पूनम रे, जे.जे बग्गा, डॉ. बी पाल थैलियेट, डॉ. प्रतीक पांडेय, डॉ. आंजनेय शुक्ला, डॉ. शरद जैन, शशांक जैन, विकल्प अग्रवाल, संजय सिंह, आकांक्षा चोपड़ा, रणधीर साहनी, अरिंदम घोष, एकता तलवार एवं रोटेरियन नितिन चोपड़ा आदि उपस्थित रहे। अंत में सचिव नितिन चोपड़ा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

विद्या भारती विद्यालयों ने धूमधाम से मनाया स्वतंत्रता दिवस

प्रयागराज। विद्या भारती से सम्बद्ध ज्वाला देवी इण्टर कालेज सिविल लाइंस, रानी रेवती देवी राजापुर, माधव ज्ञान केन्द्र इण्टर कालेज नैनी, ज्वाला देवी इण्टर कालेज रसूलाबाद आदि विद्यालयों में शनिवार को 74वां स्वतंत्रता दिवस समारोह बड़े धूमधाम से मनाया गया।

सिविल लाइंस स्थित ज्वाला देवी इण्टर कालेज में मुख्य अतिथि अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉ. यू.बी यादव, विशिष्ट अतिथि च्वयन भार्गव, शरद गुप्त, जगदीश सिंह, मोहनजी टण्डन, सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे क्षेत्रीय शिशु वाटिका प्रमुख विजय उपाध्याय ने ध्वजारोहण किया तथा मॉ भारती की आरती की। मुख्य अतिथि ने कहा हमारे महान स्वतन्त्रता सेनानियों के कड़ी मेहनत और संघर्ष के पश्चात ही भारत को पूर्ण स्वाधीनता मिली है और कुछ लोग इस स्वतंत्रता को अपना अधिकार समझकर इसका दुरुपयोग करते हैं, ऐसे लोगों को इस बात का भी ज्ञान होना चाहिए कि अधिकार एवं कर्तव्य एक ही गाड़ी के दो पहिये हैं जो एक-दूसरे के बिना पूर्ण नहीं है। विजय उपाध्याय ने कहा कि स्वाधीनता का ठीक प्रकार से पालन तभी हो सकता है जब हम ठीक प्रकार से शिक्षा ग्रहण करके देश के प्रति सम्मान एवं समर्पण का भाव रखें। विद्यालय के प्रधानाचार्य युगल किशोर मिश्र ने कहा आजादी कहने को सिर्फ एक शब्द हैं लेकिन इसकी भव्यता को कोई भी शब्दो में नहीं बांध सकता। आजादी का अर्थ है कि विकास के पथ पर आगे बढ़कर देश ओर समाज को ऐसी दिशा देना जिससे हमारे देश की सोंधी खुशबू चारों ओर फैल सके।

इसी प्रकार नैनी स्थित माधव ज्ञान केन्द्र इण्टर कालेज में विद्यालय के पूर्व प्रबंधक विजय कुमार मेहरोत्रा ने ध्वजारोहण किया। कोरोना महामारी के चलते बिना छात्रों के शिक्षक एवं कर्मचारियों ने नियमों का पालन करते हुए कार्यक्रम किया गया। इसके उपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विद्यालय समिति के पूर्व कोषाध्यक्ष डॉ. राकेश कुमार श्रीवास्तव, विशिष्ट अतिथि रणजीत सिंह उपस्थित रहे। विद्यालय के प्रधानाचार्य प्रदीप कुमार त्रिपाठी ने अतिथियों का परिचय कराया। सहायक अध्यापिका सविता त्रिपाठी ने उद्बोधन एवं पद्मा सिंह ने अपना विचार व्यक्त किया। आचार्य अखिलेश कुमार कुशवाहा एवं सुखसागर मिश्र ने अपने गीतों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। मुख्य अतिथि ने कहा कि हमारी संस्कृति का यह वैशिष्ट्य रहा है कि जो कुछ भी मानव सभ्यता के विकास क्रम में हमने अर्जित किया है, उसे सदा ही मानव मात्र हित में मुक्तहस्त समर्पित करने में तनिक भी संकोच नहीं होना चाहिए। अंत में आचार्य राधेश्याम त्रिपाठी ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

ध्वजारोहण के दौरान उपस्थित लोग

पूर्व प्रधानमंत्री अटलजी असंख्य भाजपाइयों के पथ प्रदर्शक रहे : सांसद

प्रयागराज। भारत के ओजस्वी कवि एवं भारत रत्न से सम्मानित पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई की द्वितीय पुण्यतिथि पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का स्मरण करते हुए सांसद केशरी देवी पटेल ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई असंख्य भाजपा कार्यकताओं के पथ प्रदर्शक रहे।

रविवार को फूलपुर सांसद केशरी देवी पटेल ने अपने निज आवास में उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। सांसद ने कहा कि उनकी योजनाओं को मूर्त रूप देते हुए तथा उनके विचारों पर दृढ़ता से आगे बढ़कर निश्चित ही भारत कुछ ही समय में विश्व गुरु बनेगा। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री को कवि हृदय सादगी एवं सौम्यता का प्रतिमान बताया। इस अवसर पर श्रद्धांजलि देने वालों में प्रमुख रूप से पूर्व विधायक दीपक पटेल, पूर्व विधायक गुरु प्रसाद मौर्या, सांसद मीडिया प्रभारी पार्षद पवन श्रीवास्तव, चंद्रिका पटेल, विजय पटेल, मंगलेश्वर पटेल, भूपेंद्र पांडेय सहित अन्य लोग उपस्थित रहे। इसी क्रम में सिविल लाइंस स्थित एक होटल में पार्षद पवन श्रीवास्तव के नेतृत्व में पुण्यतिथि मनायी गई। जहां उनको नमन करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित कर उनके बताए हुए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया गया। भाजपा पार्षद ने कहा कि जनसंघ से भाजपा को शिखर तक पहुंचाने वाले तथा वैश्विक स्तर पर भारत की बात को मजबूती से रखने वाले पूर्व प्रधानमंत्री अटलजी को भारत का महान सपूत तथा युगद्दष्टा बताया। उन्होंने कहा कि वे राजनीति में शुचिता के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने अपने त्यागपूर्ण जीवन से राजनीति को एक नई दिशा देने का कार्य किया। उक्त अवसर पर योगी सत्यम, पूर्व पार्षद नीरज गुप्ता, विहिप नेता विनोद सोनकर, निखिल केसरवानी, सचिन जायसवाल, अनूप कुमार, संदीप चैहान, कुशाग्र श्रीवास्तव सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

पूर्व प्रधानमंत्री अटलजी की द्वितीय पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि देते हुए

नाजरेथ अस्पताल में मना स्वतंत्रता दिवस

प्रयागराज। दिनांक 15 अगस्त 2020 को नाजरेथ अस्पताल में 74 वॉं स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन सुबह 08:30 बजे आत्म जागृत प्रार्थना गीत के साथ शुरू हुआ। श्री अखिल पटनायक, अपर प्रशासक ने मुख्य अतिथि रेव0 फादर रेजिनॉल्ड डिसूजा के स्वागत में भाषण दिया । रेव0 सिस्टर मोंसी सीएसएन, मैट्रन ने माननीय मुख्य अतिथि रेव0 फादर रेजिनाल्ड डिसूजा, नाजरेथ अस्पताल के निदेशक को एक गुलदस्ता भेंट कर उनका स्वागत किया। एवं अन्य उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों एवं नाजरेथ परिवार का सौहार्दपूर्ण रूप से स्वागत किया। रेव0 फादर रेजिनाल्ड डिसूजा ने राष्ट्रीय गान के साथ ध्वजारोहण किया। रेव0 फादर रेजिनाल्ड डिसूजा ने उपस्थित लोगों को इस पर्व के महत्व को अपने भाषण के माध्यम से बताया।

क्रियायोग सन्देश

प्रयागराज रविवार, 17 अगस्त, 2020

क्रिया योग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान में मनाया गया स्वतंत्रता दिवस

प्रयागराज। क्रियायोग आश्रम एवम् अनुसंधान संस्थान में शनिवार को राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर क्रियायोग गुरु योगी सत्यम् जी ने झंडारोहण कर वसुधैव कुटुंबकम का संदेश दिया। सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए यह त्यौहार दिव्यता और भव्यता के साथ आश्रम में मनाया गया । जहां विश्व के कई देशों के साधकों ने भारतीय राष्ट्रीय गान जन गण मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता व वन्देमातरम गीत मधुर उच्च स्वरों में गायन किया । राष्ट्रीय गीत से आश्रम परिसर गुंजायमान हो उठा।

शनिवार की सुबह प्रयागराज के हृदय स्थली झूँसी स्थित क्रिया योग आश्रम जहाँ महावतार बाबा जी ने स्वयं प्रकट होकर स्वामी श्री युक्तेश्वर जी को ज्ञान दिया था । उसी आश्रम परिसर में सबसे पहले पूर्ण स्वतन्त्रता के विषय को विस्तार से समझाने के पश्चात क्रियायोग साधना हुई । इसके पश्चात क्रिया योग गुरु योगी सत्यम् जी ने झंडारोहण कर वसुधैव कुटुंबकम भारत के साथ–साथ विश्व को संदेश देते हुए कहा कि पूरे विश्व के हम सभी मानव गण सच्ची स्वतंत्रता की ओर आगे बढ़ते हुये नित्य नयी और जागृत स्वतन्त्रता की अनुभूति तभी कर पाएंगे जब भारत का अद्भुत आध्यात्मिक डेमोक्रेसी व पश्चिम राष्ट्रों में प्रतिपल प्रफुल्लित हो रहे वैज्ञानिक विचारधारा का सम्यक् संगम हा और इस संगम का अस्तित्व तब तक बना रहे जब तक दोनों मिलकर एक न हो जाये.....

मृत्युंजय महावतार बाबा जी ने विलुप्त आध्यात्मिक विज्ञान – क्रियायोग विज्ञान को पुनर्जीवित करके पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने का मार्ग खोल दिया है। यह सिद्ध हो चुका है कि क्रियायोग के अभ्यास से भारत राष्ट्र का आध्यात्मिक विज्ञान व पश्चिम का भौतिक विज्ञान सरलता से संयुक्त हो जाता है। अखण्ड भारत का सपना तभी पूरा होगा जब हर एक देश एक दूसरे देश से प्रेम करने लगे और हर एक मानव में अहिंसा तत्व प्रकट हो । आने वाले समय में यह सपना निश्चित तौर पर पूरा होगा । इस अहिंसा तत्व को जागृत करने के लिए क्रियायोग अभ्यास जरूरी है । क्रियायोग का अभ्यास जैसे–जैसे लोग करते जाएंगे मन परिवर्तित होता जाएगा, अहिंसा तत्व जागृत होता जाएगा और एक दिन अखण्ड भारत का सपना पूरा होगा ।

Celebrating Indian Heritage

The reference to the word "Indian" does not refer in any way to the geographical land of India. Let us understand truly the idea, concept and thought behind "Indian".

The word "India" can be dissected as follows:
In = inside or within
dia = short form for dialing

"Dialing" is also referred to in the scriptural texts as "Samudra Manthan" or "Churning of the Ocean". We have to churn the Infinite ocean of knowledge, peace, power and joy that lies within us.

As we keep on practising more and more to dial within us by concentration on our existence (head to toes), we will realize the presence of knowledge of creation, preservation and change that exists within us. In any part of the world, wherever people are busy in working like Brahma (doing creative work of making new inventions), Vishnu (doing maintenance work of preservation) or Shiva (doing work of making changes), that place is celebrating True Indian Heritage.

India and America have always been very well-connected and always have had the same idea, thought and concept. "America" can also be pronounced and written as "Amarika", which can be dissected as follows:

Amar = immortality
i = nearest of near
k = to do
a = Brahma, Vishnu and Shiva (creation, preservation and change)

To be American means to be closely engaged with the work of creation, preservation and change. While doing the work, we feel ourselves as Immortal Consciousness.

In this way, both India and America have the same thought, idea and concept – to celebrate the whole universe as one home, with no division on earth, even though there may exist the different names of countries.

When we truly begin to live and celebrate Indian heritage, we will feel limitless peace, knowledge, power and joy and this will be radiated everywhere.

Celebrating India Independence Day

When we practise the True Indian Heritage of concentration on our existence as Immortal nature, we will achieve True Independence in life.

Our existence is not merely the visible, physical body but is made up of 24 inseparable elements. In fact, the 24 elements are an idea of God. In the Bible, the elements are referred to as the 24 Elders. The 24 elements are listed as follows:

Chitta (Power of thinking), Ego (Ahamkara), Mind (Manas), Wisdom (Buddhi); 5 Organs of Sense: sound, touch, vision, taste and smell; 5 Organs of Action: Voice box (larynx), hands, legs, reproductive organs and anus; 5 Tanmatras (Objects of the Senses); 5 Gross Elements – Sky, Air, Fire, Water and Earth.

When we practice Kriyayoga, we become free from the elements one by one. The gross elements merge its existence into the preceding subtle elements. Gradually, one by one, all the elements become absorbed in one another as they ascend toward God-Consciousness.

Finally, the existence of only one Eternal Element remains. This Eternal Element is the actual source of all of the 24 elements. At this point, we realize our eternal unity with God. Then, we rise above all our limited capacities of the Mind, Wisdom, Ego, and Chitta and we experience eternal freedom which is True Independence.

Therefore, the practice of True Indian Heritage is in fact the practice of Kriyayoga Meditation, whereby we concentrate on our existence (head to toes) and realize true independence in all aspects of our life. We are able to rise above the ego, habit, ignorance, pride, delusion, attachment / aversion, anger and lust and become permanently free from all problems of life - Physical, Mental, Spiritual, Emotional, Social, Individual, National and International.